1

परमेश्वर का राज्य

''उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' (कुलुस्सियों 1:13)।

किसी ने कहा है, ''समुद्र इतना गहरा है कि इसमें हाथी भी तैर सकता है परन्तु इतना छिछला भी है कि कोई बालक भी इसके किनारे खेल सकता है।'' सचमुच, समुद्र में बहुत गुण हैं। इसमें तट भी हैं और छिछला जल भी, फिर भी यह अति विशाल, गहरा, फैला हुआ और आश्चर्यजनक ढंग से लम्बा-चौड़ा है।

ऐसे ही नये नियम की कलीसिया की भी बहुत सी विशेषताएं हैं। कार्य की इसकी एकता और मसीह के साथ अपने मेल पर विचार करने पर, कलीसिया हमें मसीह की देह के रूप में मिलती है (रोमियों 12:5)। समर्थन और संगति पर विचार करने पर कलीसिया के रूप में इसकी गर्मजोशी, सहायता और संगति पर विचार करने से यह हमें परमेश्वर के परिवार के रूप में मिलती है (इफिसियों 2:19)। जब हम परमेश्वर के शासन तथा राज्य के रूप में इस पर विचार करते हैं, तो यह हमें पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के रूप में मिलती है (मत्ती 16:16-18)।

ये अलग-अलग शब्द चित्रण आपस में उलझते नहीं हैं बल्कि उस ईश्वरीय संगठन के संयुक्त स्वभाव को दर्शाने के लिए, जिसे हम (अनुवाद करके) कलीसिया कहते हैं, एक दूसरे से मिल जाते हैं। क्रूस के द्वारा दी गई नये नियम की मसीह की कलीसिया की महिमा इसमें पाए जाने वाले पवित्र कामों की बहुतायत में है।

नि:संदेह पवित्र आत्मा की इच्छा है कि हम कलीसिया को राज्य के रूप में देखें। पौलुस ने मसीह में मन परिवर्तन को अंधकार के राज्य से मसीह के राज्य में बदलना कहा है: ''उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' (कुलुस्सियों 1:13)। मनपरिवर्तन को नये नियम में किसी और जगह मसीह की देह में प्रवेश करना (उदाहरण के लिए, रोमियों 6:3; गलतियों 3:27) और मसीह की देह को कलीसिया कहा गया है (इफिसियों 1:21-23), इसलिए इसका अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा चाहता है कि हम कलीसिया, अर्थात मसीह की देह और मसीह के राज्य (या

परमेश्वर के राज्य) को एक ही आत्मिक संगठन के रूप में देखें।

बाइबल में ''राज्य'' शब्द का इस्तेमाल कम से कम छह संदर्भों में हुआ है। (1) इसका इस्तेमाल पृथ्वी के, सांसारिक व सरकारी प्रबन्ध के लिए किया जाता है (मत्ती 4:8)। (2) पुराने और नये नियमों में इसका इस्तेमाल ''परमेश्वर के सिंहासन'' की धारणा को समझाने के लिए किया जाता है। परमेश्वर ने औपचारिक रूप से इस्राएल को अपनी चुनी हुई जाति बनाकर इसे अपने राज्य के रूप में पहचान दी थी (निर्गमन 19:5, 6)। (3) इसका इस्तेमाल परमेश्वर के शासन या शक्ति के सम्बन्ध में किया जाता है (मत्ती 12:28)। जहां भी परमेश्वर की इच्छा पूरी की जाती है, वहीं परमेश्वर का सिंहासन अर्थात राज्य अस्तित्व में होता है। (4) इसका इस्तेमाल स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के लिए किया जाता है। पतरस ने हमसे मसीही गुणों में बढ़ने का आग्रह करते हुए, स्वर्ग को हमारे प्रभु के अनन्त राज्य के रूप में बताया: ''बरन इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे'' (2 पतरस 1:11)। (5) इसे कलीसिया के लिए इस्तेमाल किया जाता है। कलीसिया पृथ्वी पर परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य का प्रदर्शन है। इसलिए इसे स्वर्ग के राज्य (मत्ती 16:18, 19), परमेश्वर के राज्य (यूहन्ना 3:5), और उसके प्रिय पुत्र के राज्य (कुलुस्सियों 1:13) की संज्ञा दी जाती है। (6) इस शब्द का इस्तेमाल शैतान के नियन्त्रण के लिए भी किया जाता है। उसकी शक्ति ''शैतान के राज्य'' (मत्ती 12:26) वाक्यांश से पता चलती है।[1]

कलीसिया को परमेश्वर के राज्य के रूप में प्रतिबिम्बित करना उत्साहवर्धक है और कौतूहल मचाने वाला भी। आइए अब विशेष रूप से पृथ्वी पर प्रभु के राज्य अर्थात कलीसिया की विशेषताओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

एक आत्मिक राज्य

अपने मूल स्वभाव में, कलीसिया शारीरिक या सांसारिक नहीं बल्कि आत्मिक राज्य है। पिलातुस द्वारा यीशु से यह पूछने पर कि, ''क्या तू यहूदियों का राजा है?'' (यूहन्ना 18:33), यीशु ने उत्तर दिया था, ''कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता: परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं'' (यूहन्ना 18:36)।

राज्य की इस आत्मिक प्रकृति से कलीसिया से सम्बन्धित व्यापक सच्चाइयों का परिचय मिलता है। पहली बात, कलीसिया के मुख्यालय पृथ्वी पर नहीं बल्कि स्वर्ग में हैं। हमारा सर्वसत्ता सम्पन्न राजा मसीह स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है (प्रेरितों 2:33)। वह पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य अर्थात कलीसिया पर राजा के रूप में समय के अन्त तक राज्य करेगा, जब वह राज्य को पिता के हाथ में सौंप देगा (1 कुरिन्थियों 15:24)। इसलिए, मसीही लोग वे हैं जिन्होंने यीशु को प्रभु मानकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश पा

लिया है (फिलिप्पियों 2:9-11)।

दूसरी बात, मसीही लोगों के जीवन, कामों और आराधना का आधार शारीरिक नहीं, बल्कि आत्मिक है। हम आत्मिक युद्ध करते हैं (इफिसियों 6:12), परमेश्वर को आत्मिक बलिदान चढ़ाते हैं (1 पतरस 2:5), आत्मिक भोजन खाते हैं (इब्रानियों 5:12-14) और इस संसार में परदेसियों की तरह रहते हैं जिनका घर स्वर्ग में है (फिलिप्पियों 3:20; 1 पतरस 2:11)।

तीसरी बात, उसके आत्मिक राज्य का सदस्य होने के कारण, इस संसार की भौतिक वास्तविकताओं से हमारा सम्बन्ध स्वर्ग के राज्य की आत्मिक नागरिकता से संचालित होता है। अनन्तकाल की दूरबीन से देखने पर हमें इस जीवन की नकली चमक व्यर्थ प्रतीत होती है।

किसी ने मसीही तथा शैतान में होने वाले वार्तालाप की कल्पना इस प्रकार की है। शैतान कहता है, ''हे मसीही मनुष्य, मैं तुम्हें सब कुछ दूंगा। मैं तुम्हें घर, भूमि और धन भी दूंगा।'' मसीही व्यक्ति उत्तर देता है, ''मेरे पास सब कुछ है। मेरा पिता संसार और इसकी सब वस्तुओं का मालिक है। तुम मुझे कुछ नहीं दे सकते, क्योंकि मेरे पास सब कुछ है।'' शैतान फिर से कोशिश करता है: ''मैं तुम से सब कुछ छीन लूंगा। मैं तुम्हारा घर, तुम्हारी खुशी और तुम्हारा धन तुम से छीन लूंगा।'' मसीही व्यक्ति उत्तर देता है, ''तुम मुझ से कुछ नहीं छीन सकते। मेरे पास तो कुछ है ही नहीं। मेरा जो कुछ भी है वह सब परमेश्वर को समर्पित कर दिया गया है। मैं उसके आत्मिक राज्य में हूं, इसलिए मेरा वास्तविक धन तो आत्मिक है।'' शैतान एक बार फिर कोशिश करता है: ''मैं तुम्हें मार दूंगा। मैं तेरी जान ले लूंगा।'' मसीही व्यक्ति कहता है, ''मेरे लिए जीवित रहना मसीह है और मरना लाभ है।'' शैतान अन्तिम प्रयास करता है: ''मैं तुम्हें दुखी कर दूंगा। तुम उन सभी वस्तुओं को देखोगे जिनका मेरे लोग आनन्द ले रहे हैं और तुम कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाओगे। तुम निराशा में जीवन बिताओगे।'' मसीही व्यक्ति ऐलान करता है, ''मेरी सबसे बड़ी खुशी यीशु की इच्छा को पूरा करना है।'' परमेश्वर के आत्मिक राज्य का सदस्य होने से हम पर इस संसार और इसकी लालसाओं पर अलग ढंग से प्रकाश डाला जाता है। इससे हमें यूहन्ना से यह कहने में सहायता मिलती है, ''और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा'' (1 यूहन्ना 2:17)।

स्वर्ग के राज्य के नागरिक इस संसार को इसके लोगों की तरह नहीं देखते। इस संसार के लोग अपनी सम्पत्तियों, अपने वर्तमान, भविष्य और सांसारिक मामलों की चिन्ता करते हैं। मसीही लोग *संसार में* तो हैं, परन्तु हम *संसार के नहीं हैं।* हम इस सांसारिक राज्य के नहीं बल्कि आत्मिक राज्य के हैं। हमारा समर्पण सांसारिक नहीं बल्कि आत्मिक है। रोगियों की सेवा करके, भूखों को भोजन करवाकर और संसार को रहने के लिए अच्छा स्थान बनाकर, हम दिखाते हैं कि हमारी वास्तविक दिलचस्पी अनन्तकाल तक प्रतिफल पाने में है। जिन लोगों से हम मिलते हैं उनको भी हम दूसरी सब बातों के बजाय आत्मिक उद्धार की बात ही सिखाते हैं। हमारे लक्ष्य सांसारिक नहीं बल्कि आत्मिक हैं। इस संसार के लोग

नये कपड़े बेचते हैं; मसीही लोग आत्माओं को नया बनाने की खोज में हैं।

धार्मिकता का राज्य

दूसरा, कलीसिया धर्म का राज्य है। स्वर्ग के राज्य के नागरिक पहले जैसा अर्थात इस राज्य में प्रवेश से पहले वाला जीवन नहीं बिताते। पौलुस ने कहा था कि राज्य के लोग ज्योति की संतान हैं: ''क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो। (क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है)। और यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है ?'' (इफिसियों 5:8-10)। उसने आगे कहा, ''क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना पीना नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा में होता है'' (रोमियों 14:17, 18क)।

नये नियम में दो प्रकार की धार्मिकता की बात की गई है। एक *विस्तृत धार्मिकता* है, जिसकी बात आत्मा की प्रेरणा प्राप्त लेखक प्राय: करते थे। मसीही बनने पर, हम में यह धार्मिकता आ जाती है और हम परमेश्वर के सामने धर्मी ठहरते हैं। मसीह में परिवर्तित होने पर हम ''उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में हैं, ... धर्मी ठहराए जाते हैं'' (रोमियों 3:24)।

नया नियम *प्रकट धार्मिकता* की भी बात करता है। मसीही लोगों को धार्मिकता में चलने की आदत डालनी चाहिए। यूहन्ना ने लिखा है, ''... जो धर्म के काम करता है, वह उसकी नाईं धर्मी है'' (1 यूहन्ना 3:7)। मसीही लोगों के लिए पाप ''में रहना'' या ''चलना'' इतना असोचनीय है कि यूहन्ना कहता है कि, ''जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, ... जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; ...'' (1 यूहन्ना 3:8, 9)। इसलिए, परमेश्वर का राज्य, धार्मिकता का राज्य है; धार्मिकता उन लोगों को दी जाती है जो इसमें प्रवेश करते हैं, और उन लोगों द्वारा प्रकट की जाती है जो सचमुच इसके नागरिक हैं।

परमेश्वर के शासन तथा सिंहासन की जीवन में पाई जाने वाली धार्मिकता से ही पता चलता है। इस संदर्भ में एक आदमी की कहानी बताई जाती है जो 1930वें दशक की मंदी के दौर में अमेरिका में रहता था। वह मसीह की एक ऐसी कलीसिया का सदस्य था जिस पर मंदी का कोई प्रभाव नहीं था। दूसरे लोग तो निर्धनता में कष्ट भोग रहे थे, परन्तु वह शान्ति तथा समृद्धि से रह रहा था। परन्तु, रविवार की सुबह, जब चंदे की थाली उसकी ओर लाई गई तो उसने उसमें केवल एक ही सिक्का डाला। उस दिन, कलीसिया को संसार में मसीह का कार्य करने के लिए उसकी आर्थिक सहायता की बड़ी आवश्यकता थी, परन्तु उसने जानबूझकर फिर भी एक ही सिक्का दिया। स्पष्टतया, वह राज्य में था परन्तु राज्य उसमें नहीं था।

हम सचमुच परमेश्वर के राज्य के नागरिक तभी बनते हैं जब परमेश्वर हमारे मनों पर शासन करता है। इस राज्य की नागरिकता का अर्थ परमेश्वर की सम्पूर्ण प्रभुता को मानना और दैनिक जीवन में उसकी इच्छा के आगे स्वयं को समर्पण करना है।

एक अनन्त राज्य

तीसरा, कलीसिया पृथ्वी पर परमेश्वर का अनन्त राज्य है। यह बह जाने वाली या अस्थाई नहीं, बल्कि स्थाई और न हिलने वाली और सदा तक रहने वाली है।

दानिय्येल ने भविष्यवाणी की थी कि स्वर्ग का परमेश्वर एक राज्य स्थापित करेगा जो कभी नाश नहीं होगा (दानिय्येल 2:44)। मरियम पर यह प्रकट करते समय कि वह मसायाह की सांसारिक माता होगी, जिब्राइल ने उस अनन्त राज्य की विशेषताएं बताई थीं जिस पर मसीह को शासन करना था: ''वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा। और वह याकूब के घराने पर सदा शासन करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा'' (लूका 1:32, 33)। कलीसिया स्थापित करने की अपनी इच्छा की घोषणा करते हुए, यीशु ने प्रतिज्ञा की थी कि अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल नहीं होंगे (मत्ती 16:18)। इब्रानियों 12:28 में परमेश्वर के राज्य का वर्णन एक ऐसे राज्य के रूप में किया गया है जिसे हिलाया नहीं जा सकता।

स्वर्ग के राज्य के नागरिकों के रूप में मसीही लोगों को अनन्त जीवन मिला है। यह जीवन *अब एक अनुभव* और *भविष्य की एक आशा* है। जितनों को यीशु मिल गया है उन सब के पास अब अनन्त जीवन है, क्योंकि वह प्रकट रूप में अनन्त जीवन है (1 यूहन्ना 1:2)। परिणामस्वरूप, यूहन्ना लिखता है कि, ''जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं *रहता*'' (1 यूहन्ना 3:15)। परमेश्वर के राज्य का अनन्त स्वभाव अपने आप में जीवन और अनन्त जीवन के गुणों को व्यक्त करता है जिसे मसीही होने के कारण हम अब अनुभव करते हैं और अनन्तकाल में पाने की आशा करते हैं।

अनन्त जीवन में हमारे प्रवेश की बात किसी बच्चे के मां के गर्भ से निकलकर संसार में प्रवेश करने की तरह है। बच्चा अपनी मां की कोख में रहता है परन्तु जीवन का उसका अनुभव बेशक आराम, सब आवश्यकताओं को पूरा करने और सुरक्षा है, परन्तु यह समय सीमित है। जन्म के समय तक बच्चे के जीवन के अनुभव होते हैं, परन्तु यह जीवन भिन्न और पूर्ण रूप में है जिसमें संगति, विकास और कार्य की लगभग असीमित सम्भावनाएं हैं। अब मसीह हमारे मनों में रहकर, जीवन का एक नया और अद्‌भुत गुण अर्थात अनन्त जीवन देता है; परन्तु जब हम जीवन के दूसरी ओर जाते हैं, तो यही अनन्त जीवन अपने आपको एक अलग और पूर्ण रूप से स्वर्गीय संगति, कहने से बाहर आनन्द और अनन्त सेवा के साथ व्यक्त करता है।

मसीही लोग उस अनन्त राज्य के भाग हैं जिस पर समय या सांसारिक वस्तुओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। जब तक हम परमेश्वर के वचन के प्रति विश्वासी रहकर उसकी सुरक्षा के दायरे में रहते हैं तब तक हम उस एक राज्य के भाग हैं जिसका नाश नहीं हो सकता और न कभी समाप्त होगा।

सारांश

मसीही व्यक्ति के मन में परमेश्वर के शासन और सिंहासन के आकार का इस्तेमाल करते हुए, नये नियम की कलीसिया परमेश्वर का राज्य है, जिसे आत्मिक काम, धार्मिकता और अनन्त जीवन मिले हैं। इसके नागरिक इस संसार में रहते हैं, परन्तु उनके मन तथा नागरिकता किसी दूसरे संसार अर्थात परमेश्वर के अनन्त राज्य के हैं (कुलुस्सियों 3:1, 2; फिलिप्पियों 3:20)।

यहूदियों के एक धर्मगुरु, निकुदेमुस ने एक रात यीशु से परमेश्वर के राज्य के विषय में जानना चाहा था। यीशु ने उसे बताया था कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए बदलाव इतना कठोर तथा परिवर्तनशील है कि इसे जन्म का चित्र दिखाकर ही समझाया जा सकता है। उसने कहा था, ''कि मैं तुझ से सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता'' (यूहन्ना 3:5)। पृथ्वी पर आधिकारिक तौर पर आरम्भ में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के दिन, पतरस ने लोगों की भीड़ को यीशु में उनके विश्वास की रोशनी में, मन फिराने और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने को कहा था (प्रेरितों 2:38-41)। यीशु द्वारा यूहन्ना 3 में निकुदेमुस को बताया गया नया जन्म प्रेरितों 2 में पतरस द्वारा दिया गया था। परमेश्वर के राज्य अर्थात कलीसिया में जन्म या प्रवेश के लिए यीशु में विश्वास करना (यूहन्ना 3:16), मन फिराव या पापों से परमेश्वर की ओर मुड़ना (प्रेरितों 17:30), परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु को स्वीकार करना (रोमियों 10:9, 10) और पापों की क्षमा के लिए मसीह में बपतिस्मा लेना आवश्यक है (प्रेरितों 2:38; 22:16)।

परमेश्वर के राज्य की नागरिकता जीवन का एक आत्मिक केन्द्र व परमेश्वर का सिंहासन लाती है जो स्थिरता, अगुआई, समझ तथा सम्पूर्णता देकर जीवन की प्रत्येक दिशा से होकर गुज़रती है। यह पवित्र नागरिकता हमें धर्मी अर्थात भले बनाकर हमारे जीवनों में शान्ति लाती है। इस नाशवान संसार में, परमेश्वर का राज्य हमारे जीवनों में आज के लिए और आने वाले कल के लिए अनन्त जीवन भर देता है।

क्या आप परमेश्वर के अनन्त राज्य, ''कलीसिया'' के नागरिक हैं?

पाद टिप्पणी

[1]डॉ. ऍंडी क्लोर की व्हट इज़ ''द चर्च'' पुस्तक में Appendix 2 में राज्य के लिए नये नियम के ''Kingdom'' और ''Kingdoms'' के सभी हवाले शामिल हैं। इन हवालों से नये नियम में इन शब्दों के इस्तेमाल को समझने में सहायता मिल सकती है। नये नियम में ''राज्य'' शब्द 152 बार, और ''राज्यों'' शब्द 3 बार आया है। देखें ऍंडी क्लोर, व्हट इज़ ''द चर्च''? (सरसी, आरक.: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 1993), 187-213.

अध्ययन एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. उन विभिन्न गुणों की सूची बनाएं जो कलीसिया में पाए जाते हैं। प्रत्येक गुण का एक संक्षिप्त विवरण दें।
2. पवित्र शास्त्र की कौन सी आयतें संकेत देती हैं कि कलीसिया को राज्य के रूप में देखा जाना चाहिए?
3. नये नियम में प्रयुक्त ''राज्य'' शब्द के विभिन्न संदर्भों की सूची बनाएं।
4. कलीसिया के विषय में वे कौन से निष्कर्ष हैं जो राज्य के आत्मिक होने की मांग करते हैं? निष्कर्षों की सूची बनाकर व्याख्या करें।
5. यदि हम आत्मिक राज्य के भाग हैं, तो हमें एक नई व्यस्था दी गई है। इस व्यवस्था पर चर्चा करें।
6. नये नियम में किन दो धार्मिकताओं का उल्लेख है? प्रत्येक का वर्णन करें।
7. क्या दानिय्येल 2:44 उस राज्य के अनन्त स्वभाव को व्यक्त करता है जो परमेश्वर को स्थापित करना था?
8. चर्चा करें कि परमेश्वर का राज्य अब एक अनुभव और भविष्य के लिए आशा कैसे है।
9. चर्चा करें कि अनन्त जीवन अब कैसे व्यक्त किया जाता है और अनन्तकाल में कैसे व्यक्त किया जाएगा।
10. आज हमारे जीवनों पर स्वर्ग में हमारी नागरिकता का क्या अर्थ है?
11. परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कैसे किया जाता है?
12. यूहन्ना 3:3, 5 से प्रेरितों 2:38 की तुलना करें।